

# दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ छियानवे

भविष्यवाणीगत समानताएँ और दैवी निराशा: प्रकाशितवाक्य 10 में परमेश्वर के अंतकालीन लोगों की रहस्योद्घाटन यात्रा

Jeff Pippenger

2024-04-27

प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय में, जहाँ प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेशों का इतिहास प्रस्तुत किया गया है, वहाँ परमेश्वर के अंतिम दिनों के लोगों के प्रतीक के रूप में यूहन्ना को पहले ही यह बता दिया गया था कि जिस इतिहास का वह प्रतीकात्मक रूप से प्रतिनिधित्व करता था, उसमें एक निराशा आने वाली है; और वह निराशा, प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के इतिहास का वही तत्त्व था जो मिलेराइटों की समझ के लिए मुहरबंद रखा गया था, ताकि उनकी आस्था की परीक्षा ली जा सके।

और स्वर्ग से जो आवाज़ मैंने सुनी थी, वह फिर मुझसे बोली और कहा, जा, और वह छोटी पुस्तक ले ले, जो उस स्वर्गदूत के हाथ में खुली है जो समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है। तब मैं उस स्वर्गदूत के पास गया और उससे कहा, मुझे वह छोटी पुस्तक दे। उसने मुझसे कहा, इसे ले और इसे खा ले; यह तेरे पेट को कड़वा कर देगा, पर तेरे मुंह में यह शहद के समान मीठा होगा। तब मैंने स्वर्गदूत के हाथ से वह छोटी पुस्तक ले ली और उसे खा लिया; और वह मेरे मुंह में शहद के समान मीठी थी; और जैसे ही मैंने उसे खा लिया, मेरा पेट कड़वा हो गया। प्रकाशितवाक्य 10:8-10.

दसवीं आयत में, यूहन्ना 11 अगस्त, 1840 से, जब एक शक्तिशाली स्वर्गदूत अपने हाथ में एक छोटी पुस्तक लेकर उतरा, 22 अक्टूबर, 1844 की महान निराशा तक के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है। उस इतिहास का प्रतीकात्मक रूप से निरूपण करने से पहले, उसे "वह आवाज़ जो" उसने "स्वर्ग से सुनी" यह बताती है कि जब वह उस छोटी पुस्तक को खाएगा, "तो वह तेरे पेट को कड़वा करेगी, पर तेरे मुंह में मधु के समान मीठी होगी।" उसी कड़वी निराशा ने मिलेराइटों के विश्वास की परीक्षा ली, और उनके लिए यह सर्वोत्तम नहीं था कि वे उसके आने से पहले उस निराशा के बारे में जान लें, परन्तु यूहन्ना अंतिम दिनों के उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें घटनाओं की रूपरेखा से संबंधित उन तथ्यों को जानना आवश्यक है, जो प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेश का इतिहास हैं।

वह पवित्र इतिहास यह बताता है कि अंतिम दिनों के लोगों पर एक परीक्षा आने वाली थी, और वह परीक्षा ऐसी बात पर आधारित होने वाली थी जिसे परीक्षा से पहले उनके लिए समझ लेना उत्तम नहीं था; फिर भी वह मिलेराइट्स का ठीक वही अनुभव नहीं था, यद्यपि वह पहले और दूसरे स्वर्गदूत द्वारा दर्शाई गई घटनाओं की रूपरेखा के साथ पूर्णतः मेल खाता था, क्योंकि सात गर्जनाएँ भी "भविष्य की वे घटनाएँ जो अपने क्रम में प्रकट की जाएँगी" का प्रतिनिधित्व करती हैं।

यद्यपि मिलेराइट्स के आधारभूत इतिहास को जानना आवश्यक है, परमेश्वर की अंतिम समय की प्रजा मिलेराइट्स के समान घटनाओं की वही रूपरेखा पूरी करेगी; परन्तु मिलेराइट्स की जो परीक्षा थी—जिसके बारे में उनके लिए पहले से जानना ही अच्छा नहीं था—वह एक भिन्न परीक्षा होगी, जो ऐसे तत्व के कारण लाई गई थी जो तब तक मुहरबंद था जब तक यह समय निकट न आ गया कि यहूदा के गोत्र का सिंह यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की मुहरें खोले, जो दानियेल ग्यारह के चालीसवें पद के गुप्त इतिहास में घटित होता है।

जो कुछ मुहरबंद किया गया था, वह परमेश्वर के अंत-समय के लोगों की परीक्षा लेने के लिए ठहराया गया था, और वह परीक्षा उस मार्गचिह्न के अनुरूप होगी जहाँ मिलेराइटियों की परीक्षा ली गई थी; क्योंकि, चाहे मिलेराइती इतिहास में पहली पूर्ति हो या अंतिम दिनों की अंतिम पूर्ति, सात गर्जनाएँ "घटनाओं का एक विवरण" थीं "जो अपने क्रम में प्रकट की जाएँगी।"

जो बात व्यापक रूप से अनदेखी रह गई है, वह यह है कि जैसे यूहन्ना 11 अगस्त, 1840 को छोटी पुस्तक लिए मसीह के अवतरण से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 की महान निराशा तक के इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है, उसी इतिहास का प्रतिनिधित्व 19 अप्रैल, 1844 को दूसरे स्वर्गदूत के अवतरण द्वारा भी किया गया था। पहली निराशा को यूहन्ना की निराशा के रूप में समझा जा सकता है, जो 11 अगस्त, 1840 को छोटी पुस्तक खाने के बाद 19 अप्रैल, 1844 को निराशा का सामना किया। जब वह निराशा आई, तो दूसरा स्वर्गदूत अपने हाथ में एक "लेखन" लेकर उतरा।

"एक और पराक्रमी स्वर्गदूत को पृथ्वी पर उतरने का आदेश दिया गया। यीशु ने उसके हाथ में एक लिखित संदेश रखा, और जब वह पृथ्वी पर आया, तो उसने पुकारा, 'बाबुल गिर पड़ा है, गिर पड़ा है।' तब मैंने देखा कि निराश लोग फिर से अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाते हुए अपने प्रभु के प्रकट होने को विश्वास और आशा से निहार रहे थे। परन्तु बहुत से लोग मानो सो रहे हों, ऐसी जड़-सी अवस्था में पड़े दिखाई दिए; तौभी उनके मुखों पर गहरे शोक के चिह्न मैं देखती थी। निराश लोगों ने पवित्रशास्त्र से देखा कि वे प्रतीक्षा के समय में हैं, और यह कि उन्हें दर्शन की पूर्ति के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए। वही प्रमाण, जिसने उन्हें 1843 में अपने प्रभु की प्रतीक्षा करने के लिए प्रेरित किया था, उसी ने उन्हें 1844 में भी उसके आने की आशा करने के लिए प्रेरित किया। तौभी मैंने देखा कि अधिकांश के पास वह उत्साह नहीं रहा, जो 1843 में उनके विश्वास की पहचान था। उनकी निराशा ने उनके विश्वास को कमजोर कर दिया था।" *Early Writings*, 247.

अध्याय दस में यूहन्ना द्वारा प्रस्तुत मिलराइट इतिहास, प्रथम और द्वितीय दोनों स्वर्गदूतों का इतिहास है। संदेश के साथ पहले स्वर्गदूत का उतरना और संदेश के साथ दूसरे स्वर्गदूत का उतरना, अपने-अपने इतिहास की शुरुआत को चिह्नित करते हैं, जो दोनों अंततः निराशा में समाप्त हुए, यद्यपि यूहन्ना दोनों स्वर्गदूतों के समस्त इतिहास को अधिक प्रत्यक्ष रूप से चित्रित कर रहा है। 22 अक्टूबर, 1844 के बाद भी, जब तीसरा स्वर्गदूत एक संदेश के साथ आया, 1863 के विद्रोह की निराशा, ऐसी अवधि की तीसरी साक्षी प्रदान करती है जो एक संदेश से आरंभ होकर निराशा पर समाप्त होती है।

18 जुलाई, 2020 को तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन की पहली निराशा मिलरवादियों की पहली निराशा के समानांतर थी। एक सत्य मुहरबंद कर दिया गया था, जैसे 1844 का सत्य भी मुहरबंद किया गया था, जब प्रभु ने कुछ आँकड़ों में हुई एक भूल पर अपना हाथ रखकर उसे ढक दिया था, और उसी से मिलरवादियों की पहली निराशा उत्पन्न हुई थी। जब बाद में उस भूल को समझ लिया गया, तो उस पर लगी मुहर खुल गई, क्योंकि यहूदा के वंश का सिंह अपना हाथ हटा चुका था। 18 जुलाई, 2020 की भूल इस कारण हुई कि यह स्वीकार करने से इंकार कर दिया गया कि 22 अक्टूबर, 1844 को, जब उन्होंने यह घोषित किया कि 'अब और समय न रहेगा', तब उन्होंने अपना हाथ उठा रखा था।

चाहे वह पहले स्वर्गदूत की पहली निराशा का फिलाडेल्फिया आंदोलन हो, या तीसरे स्वर्गदूत का लाओदीकिया आंदोलन की पहली निराशा, उसका हाथ मार्गचिह्न का प्रतीक है। 19 अप्रैल, 1844 और 18 जुलाई, 2020 को उस निराशा ने बिखराव का समय उत्पन्न किया। जो लोग 11 अगस्त, 1840 या 11 सितंबर, 2001 को एकत्र किए गए थे, वे बिखर गए, और उसके बाद मसीह ने अपने लोगों को दूसरी बार एकत्र करना शुरू किया।

उसने 11 सितंबर 2001 से एक समुदाय को एकत्र करना शुरू किया था, क्योंकि जैसा कि मसीह के बपतिस्मा द्वारा दर्शाया गया है, दिव्य प्रतीक जब उतरता है तभी वह अपने चेलों को एकत्र करना आरंभ करता है, उससे पहले नहीं। फिर, एक बिखराव के बाद, मसीह अपने लोगों को दूसरी बार एकत्र करता है। मसीह ने अपने बपतिस्मा से अपने चेलों को एकत्र करना शुरू किया, और क्रूस से उत्पन्न बिखराव के बाद, उसने अपने चेलों को दूसरी बार एकत्र करना शुरू किया। दूसरे एकत्रीकरण का भविष्यदर्शी तथ्य, जो जुलाई 2023 में शुरू हुआ, उन बातों का हिस्सा था जो 18 जुलाई 2020 को मुहरबंद कर दी गई थीं, यद्यपि वह मिलराइटों के इतिहास का एक स्पष्ट तत्व था।

दानिय्येल 11 के पद 40 में, अथाह कुंड से निकला पशु उठा और सन् 2020 में पृथ्वी के पशु के दोनों सींगों को मार डाला। जुलाई 2023 में, प्रभु ने अपनी अंत-समय की प्रजा को दूसरी बार एकत्र करना आरंभ किया। एकत्र करने की प्रक्रिया पवित्र मिलराइट इतिहास के भीतर निरूपित है, और उस इतिहास में उसकी प्रजा को दूसरी बार एकत्र करने के दो ऐतिहासिक साक्षी हैं। एकत्र करने की प्रक्रिया एक भविष्यसूचक तत्व है, जो जुलाई 2023 तक सील रही। उसकी प्रजा को दूसरी बार एकत्र करने का कार्य यूक्रेनी युद्ध के इतिहास के दौरान, आठवें राष्ट्रपति, जो सात में से है, के दूसरी बार चुने जाने से ठीक पहले पूरा होता है।

11 अगस्त, 1840 को प्रभु ने मिलराइट आंदोलन को एकत्र किया, और उन्होंने 1843 के चार्ट का परिचय देकर उस एकत्रीकरण को चिह्नित किया, जो मई 1842 में प्रकाशित किया गया था। वह चार्ट आधारभूत संदेश का प्रतिनिधित्व करता था, क्योंकि तब वे मिलराइट मंदिर की नींव रख रहे थे। 11 अगस्त, 1840 को प्रकाशितवाक्य के अध्याय दस के स्वर्गदूत का अवतरण मसीह के बपतिस्मा के समानांतर है, जिसने, अन्य बातों के साथ-साथ, मसीह द्वारा अपने शिष्यों के चयन की शुरुआत को चिह्नित किया।

यूहन्ना और अन्द्रियास और शमौन, तथा फिलिप्पुस और नतनेल के बुलाए जाने के साथ मसीही कलीसिया की नींव रखी गई। यूहन्ना ने अपने दो शिष्यों को मसीह की ओर निर्देशित किया। तब उनमें से एक, अन्द्रियास, ने अपने भाई को पाया और उसे उद्धारकर्ता के पास बुलाया। तब फिलिप्पुस को बुलाया गया, और वह नतनेल को खोजने निकल पड़ा। युगों की अभिलाषा, 141.

विलियम मिलर का कार्य, 1798 में अंत के समय से लेकर 11 अगस्त, 1840 तक, बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के कार्य का प्रतिनिधित्व करता था, परन्तु जब प्रकाशितवाक्य दस का दूत उतरा—जैसा कि मसीह के बपतिस्मा के समय पवित्र आत्मा के अवतरण द्वारा प्रतिरूपित था—तब प्रभु ने अपने मूल चेलों को "एकत्र" किया। ये दोनों साक्षी दर्शाते हैं कि 11 सितंबर, 2001 को, जब प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह का दूत उतरा, मसीह ने अंत-काल की अपनी प्रजा को एकत्र किया; परन्तु मिलराइटों की तरह, उन्हें सात गर्जनों के एक ऐसे तत्व द्वारा परखा जाना था, जिसे मुहरबंद किया गया था, और तब प्रभु अपनी प्रजा को दूसरी बार एकत्र करेंगे।

परमेश्वर के अंतिम दिनों के लोगों का दूसरा एकत्रीकरण उस इतिहास में आरंभ हुआ जिसका प्रतिनिधित्व दानिय्येल अध्याय 11 पद 11 के बिलकुल अंत में किया गया है, ठीक पुतिन की यूक्रेन पर विजय से पहले, और ठीक पद 12 से पहले, जहाँ रूस और पुतिन की भविष्यसूचक गवाही समाप्त हो जाती है। इसलिए दानिय्येल अध्याय 11 पद 11 प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 पद 11 के साथ मेल खाता है, क्योंकि वहीं दो गवाहों को फिर से जीवित किया जाता है।

पवित्र मिलराइट इतिहास में, 19 अप्रैल, 1844 की निराशा के बाद प्रभु ने अपने लोगों को दूसरी बार इकट्ठा करना आरम्भ किया, और उस समय अपने लोगों को इकट्ठा करने के लिए प्रभु ने जिस साधन का उपयोग किया, वह यह पहचान थी कि वे मत्ती अध्याय पच्चीस के दस कुँवारियों के दृष्टान्त के ठहराव के समय को, और साथ ही हबक्कुक अध्याय दो को, पूरा कर रहे थे। मिलराइटों के लिये अपनी अवस्था को पहचानना और लौट आना तभी सम्भव था जब वे यह स्वीकार करते कि परमेश्वर के भविष्यद्वाणी वचन में उनका ही प्रतिनिधित्व किया गया है। उन्हें यह देखना था कि वे परमेश्वर के लोग हैं, उनकी तुलना में जो उसके लोग होने का केवल दावा करते थे। अपने निराश लोगों को इकट्ठा करते हुए, वह अन्यजातियों के लिये ऊँचा उठाए जाने वाले ध्वज का एक चित्रण दे रहा था, और इस प्रकार अपने वास्तविक परन्तु निराश लोगों और केवल दावा करने वाले लोगों के बीच के भेद को रेखांकित कर रहा था।

और उस दिन यिश्ई की जड़ होगी, जो लोगों के लिये ध्वज के समान खड़ी होगी; उसकी ओर अन्यजातियाँ आएँगी, और उसका विश्राम महिमामय होगा। और उस दिन ऐसा होगा कि प्रभु दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाकर अपनी प्रजा के शेष लोगों को, जो अशूर से, और मिस्र से, और पठरोस से, और कुश से, और एलाम से, और शिनार से, और हामात से, और समुद्र के द्वीपों से बचे होंगे, छुड़ाएगा। और वह जातियों के लिये ध्वज खड़ा करेगा, और इस्राएल के निकाले हुए लोगों को इकट्ठा करेगा, और यहूदा के तितर-बितर लोगों को पृथ्वी के चारों कोनों से एकत्र करेगा। यशायाह 11:10-12.

जब भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो 19 अप्रैल 1844 को निराश हुए थे, तो वह यह स्पष्ट करता है कि वह अब 'उपहास करने वालों की सभा' से संबद्ध नहीं है, जिसने 1843 की असफल भविष्यवाणी का उपयोग इस प्रमाण के रूप में किया कि यिर्मयाह द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए लोग झूठे भविष्यद्वक्ता थे।

मैं हँसी उड़ाने वालों की सभा में नहीं बैठा, और न मैं आनन्दित हुआ; तेरे हाथ के कारण मैं अकेला बैठा, क्योंकि तूने मुझे रोष से भर दिया है। यिर्मयाह 15:17.

"उपहास करने वालों की सभा" ने यिर्मयाह द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए लोगों को बाहर निकाल दिया था।

बहुतों को उनके अविश्वासी भाइयों ने सताया। कलीसिया में अपना स्थान बनाए रखने के लिए, कुछ ने अपनी आशा के विषय में मौन रहने के लिए सहमति दी; परन्तु अन्य लोगों ने समझा कि परमेश्वर के प्रति निष्ठा उन्हें उन सत्यों को इस प्रकार छिपाने से रोकती थी जिन्हें उसने उनके भरोसे सौंपा था। कितने ही लोग केवल इस कारण से कलीसिया की संगति से अलग कर दिए गए कि उन्होंने मसीह के आगमन पर अपने विश्वास को व्यक्त किया। जिन लोगों ने अपने विश्वास की इस परख को सहा, उनके लिए भविष्यद्वक्ता के ये वचन अत्यंत अनमोल थे: 'तुम्हारे भाई जो तुम से घृणा करते हैं और मेरे नाम के कारण तुम्हें निकालते हैं, कहते हैं, यहीवा की महिमा हो; परन्तु वह तुम्हारे आनन्द का कारण होकर प्रगट होगा, और वे लज्जित होंगे।' यशायाह 66:5। महान संघर्ष, 372.

जब प्रभु अन्यजातियों के लिये ध्वज उठाएगा, यह तब होगा जब वह दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाकर अपने बचे हुए लोगों को, जो इस्राएल के निकाले हुए हैं, इकट्ठा करेगा। वे वही हैं जो अब "ठट्टा करने वालों की सभा" में नहीं बैठते।

"यिश्शै की जड़" दो रक्तवंशों का एक प्रतीक है—एक यहूदी धर्म से और दूसरा यहूदी धर्म के बाहर से—और वह केवल यीशु के रक्तवंश का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती, बल्कि दैवत्व और मानवता के संयोग का भी प्रतीक है; क्योंकि जो ध्वज ऊँचा उठाया जाता है, वह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें दैवत्व और मानवता के संयोग की अवस्था और अनुभव में सदा के लिए मुहरबंद कर दिया गया है, जिसका प्रतिनिधित्व दानियेल अध्याय ग्यारह की दसवीं आयत में "दुर्ग" के प्रतीक द्वारा भी किया गया है। दसवीं आयत में, मस्तक कही गई उस "दुर्ग" की भविष्यसूचक समझ से एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के समय का संकेत मिलता है। ग्यारहवीं आयत के इतिहास और यूक्रेन युद्ध में, प्रभु निराश किए गए निकाले हुएों को इकट्ठा करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ फैलाता है।

अतः, दानियेल अध्याय ग्यारह की गवाही को संरचना के रूप में लेकर, हमने रविवार के क्रानून से ठीक पहले भविष्यद्वक्ता के इतिहास में पापाई सत्ता के हस्तक्षेप की पहचान की है। हमने रिपब्लिकन सींग का कार्य देखा, जिसका प्रतिनिधित्व ट्रंप करता है, जब वह सातों में से आठवां बनता है और कलीसिया और राज्य को मिलाने का कार्य प्रारंभ करता है। हमारे पास प्रोटेस्टेंटवाद के धर्मत्यागी सींग की रेखा है, जिसका प्रतिनिधित्व मक्काबियों द्वारा किया गया है। उन्हीं पदों द्वारा चित्रित उसी इतिहास में, हम सात गर्जनाओं की रेखा लागू करते हैं, जो दस कुँवारियों के दृष्टान्त की रेखा भी है, जो एक लाख चौवालीस हजार के अनुभव की पहचान करती है, और साथ ही तीन स्वर्गदूतों की रेखा भी, जो सच्चे प्रोटेस्टेंट सींग के कार्य की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। उस इतिहास में सच्चे प्रोटेस्टेंट सींग के लिए घटनाओं में से एक दूसरा एकत्रीकरण है।

दूसरा एकत्रीकरण दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के इतिहास में घटित हुआ, और यह 1844 से 1863 तक तीसरे स्वर्गदूत के इतिहास में भी घटित हुआ, जिससे मिलराइट इतिहास से दो साक्ष्य स्थापित होते हैं कि प्रभु ने अपनी बिखरी हुई भेड़ों को इकट्ठा करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया।

23 सितंबर को प्रभु ने मुझे दिखाया कि उसने अपने लोगों के अवशेष को पुनः प्राप्त करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया है, और कि इस एकत्रीकरण के समय प्रयासों को दोगुना करना चाहिए। विखराव के समय इस्राएल पर प्रहार हुआ और वह विदीर्ण हुआ; पर अब एकत्रीकरण के समय परमेश्वर अपने लोगों को चंगा करेगा

और उनके घाव बाँधेगा। विखराव में सत्य को फैलाने के लिए किए गए प्रयासों का बहुत कम प्रभाव हुआ, वे बहुत कम सफल हुए या लगभग कुछ भी नहीं; पर एकत्रीकरण में, जब परमेश्वर ने अपने लोगों को इकट्ठा करने के लिए अपना हाथ लगा दिया है, तो सत्य को फैलाने के प्रयास अपने अभिप्रेत प्रभाव देंगे। सबको इस कार्य में एकजुट और उत्साही होना चाहिए। मैंने देखा कि अब जब हम एकत्र हो रहे हैं, हमें निर्देश देने के लिए उदाहरण के रूप में विखराव का सहारा लेना किसी के लिए भी गलत है; क्योंकि यदि परमेश्वर अब हमारे लिए तब से बढ़कर कुछ न करे, तो इस्राएल कभी एकत्र न होगा। Early Writings, 74.

Early Writings के परिशिष्ट में, सिस्टर व्हाइट अभी उद्धृत की गई टिप्पणी की व्याख्या करती हैं:

"3. पृष्ठ 74 पर यह दर्शन कि प्रभु ने 'अपने लोगों के शेष बचे हुए लोगों को पुनः प्राप्त करने के लिए दूसरी बार अपना हाथ बढ़ाया था,' केवल मसीह की प्रतीक्षा करने वालों के बीच कभी विद्यमान एकता और शक्ति का संदर्भ देता है, और इस तथ्य का भी कि उसने अपने लोगों को फिर से एकजुट करना और उठाना शुरू कर दिया था।" प्रारम्भिक लेखन, 86.

सात गर्जनाओं का वह पवित्र इतिहास, जो 11 अगस्त 1840 से 22 अक्टूबर 1844 तक फैला, 22 अक्टूबर 1844 से 1863 के विद्रोह तक के पवित्र इतिहास का प्रतिरूप था। पंक्ति पर पंक्ति, पहला इतिहास बुद्धिमान कुँवारियों का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है, और दूसरी पंक्ति मूर्ख कुँवारियों का उदाहरण प्रस्तुत करती है। दोनों इतिहास तब शुरू हुए जब एक स्वर्गदूत एक संदेश लेकर उतरा जिसे खाया जाना था। दोनों इतिहासों में उस स्वर्गदूत के आगमन ने परीक्षण की एक प्रक्रिया की शुरुआत की, जिसके परिणामस्वरूप विखराव हुआ, और 1849 तक बहन व्हाइट को दिखाया जा रहा था कि प्रभु फिर से, दूसरी बार, अपना हाथ बढ़ा रहे हैं; इस बार 22 अक्टूबर 1844 को बिखेर दिए गए लोगों को इकट्ठा करने के लिए।

वे महान निराशा से तितर-बितर हो गए थे, जैसे 19 अप्रैल, 1844 को बुद्धिमान लोग अपनी पहली निराशा से तितर-बितर हो गए थे। दूसरे समागम ने यह पहचाना कि प्रभु "अपने लोगों को फिर से एकजुट करना और उठाना शुरू कर चुका था"। दूसरे समागम में प्रभु के कार्य में एक ऐसे ध्वज को ऊँचा उठाना शामिल है जो संदेश के आधार पर आपस में एकजुट है, और जिसकी मानवता प्रभु की दिव्यता से संयुक्त है। उस ध्वज का उद्देश्य परमेश्वर के अन्य झुंड को बाबुल से बाहर बुलाना है, जो तब पूरा होता है जब पुरुष और स्त्रियाँ उस ध्वज को देखते हैं।

ध्वज वह सेना है जो उन लोगों से बनी है जिन्होंने रविवार के क़ानून की परीक्षा के समय अपनी मानवता को मसीह की दिव्यता के साथ जोड़ दिया है। अतः, द्वितीय एकत्रीकरण "यिंशै की जड़" की पहचान करता है, जिसे ऊँचा उठाया जाएगा, और जो रूत की द्विगुण भविष्यसूचक प्रतीकात्मकता लिए होगा—रूत, एक अन्यजाति, जो बोअज़ से जुड़कर उस ध्वज द्वारा एकत्र की जाती है; बोअज़, जो एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतीक है, और साथ ही मुक्तिदाता का भी प्रतीक है, जिसने रूत के लिए मूल्य चुकाया और उसका निकट संबंधी था। मसीह के दिव्य स्वभाव का मानव स्वभाव के पतित शरीर के साथ देहधारण होने में वह हमारा निकट संबंधी बन गया। जो ध्वज ऊँचा उठाया जाता है, वह वे लोग हैं जो संदेश द्वारा एक किए गए हैं, जो रविवार के क़ानून से पूर्व अपनी मानवता को मसीह की दिव्यता से जोड़ने के कार्य को पूर्ण करते हैं।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

जितना अधिक बाइबल का अध्ययन किया जाए, उतनी ही उसकी सराहना बढ़ती जाती है। विद्यार्थी चाहे जिस ओर भी मुड़ जाए, उसे परमेश्वर की अनंत बुद्धि और प्रेम प्रकट होते दिखाई देंगे।

यहूदी धर्म-व्यवस्था का महत्व अभी तक पूरी तरह समझा नहीं गया है। इसके अनुष्ठानों और प्रतीकों में व्यापक और गहन सत्य झलकते हैं। सुसमाचार उसके भेद खोलने वाली कुंजी है। उद्धार की योजना का ज्ञान होने से उसके सत्य समझ के लिए खुल जाते हैं। जितना हम समझते हैं, उससे कहीं अधिक, इन अद्भुत विषयों को समझना हमारा विशेषाधिकार है। हमें परमेश्वर की गूढ़ बातों को समझना है। स्वर्गदूत उन सत्यों को देखने की

इच्छा रखते हैं जो उन लोगों पर प्रकट किए जाते हैं, जो टूटे और खेदित हृदय से परमेश्वर के वचन की खोज कर रहे हैं और उस ज्ञान की और भी अधिक लंबाई, चौड़ाई, गहराई और ऊँचाई के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, जो केवल वही दे सकता है।

जैसे-जैसे हम इस संसार के इतिहास के समापन के निकट पहुँच रहे हैं, अंतिम दिनों से संबंधित भविष्यवाणियाँ विशेष रूप से हमारे अध्ययन की मांग करती हैं। नए नियम की अंतिम पुस्तक उन सच्चाइयों से भरी है जिन्हें हमें समझना आवश्यक है। शैतान ने बहुतों के मन को अंधा कर दिया है, जिससे वे प्रकाशितवाक्य का अध्ययन न करने के लिए कोई भी बहाना मिलते ही खुश हो जाते हैं। परन्तु मसीह ने अपने दास यूहन्ना के माध्यम से यहाँ यह घोषित किया है कि अंतिम दिनों में क्या होगा, और वह कहता है, 'धन्य है वह जो पढ़ता है, और वे जो इस भविष्यवाणी के वचन सुनते हैं, और जो उसमें लिखी हुई बातों का पालन करते हैं।' प्रकाशितवाक्य 1:3.

'यह अनन्त जीवन है,' मसीह ने कहा, 'कि वे तुझे, जो अकेला सच्चा परमेश्वर है, और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जान लें।' यूहन्ना 17:3। हम इस ज्ञान के मूल्य को क्यों नहीं समझते? ये महिमामय सत्य हमारे हृदयों में क्यों नहीं दमकते, हमारे होंठों पर क्यों नहीं कंपते, और हमारे पूरे अस्तित्व में क्यों नहीं व्याप्त हो जाते?

"हमें अपना वचन देकर परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिए आवश्यक हर वह सत्य हमारे पास रख दिया है। हजारों ने इन जीवन के कुओं से जल निकाला है, फिर भी भंडार में कोई कमी नहीं आई। हजारों ने प्रभु को अपने सामने रखा है, और निहारते-निहारते वे उसी स्वरूप में रूपांतरित हो गए हैं। जब वे उसके चरित्र की बातें करते हैं—मसीह उनके लिए क्या है, और वे मसीह के लिए क्या हैं—तो उनकी आत्मा उनके भीतर जल उठती है। परंतु इन खोजियों ने इन महान और पवित्र विषयों को समाप्त नहीं कर दिया है। और हजारों और लोग उद्धार के रहस्यों को खोजने के कार्य में लग सकते हैं। जैसे-जैसे मसीह के जीवन और उसके मिशन के स्वरूप पर मनन किया जाएगा, सत्य को खोजने के हर प्रयास में प्रकाश की किरणें और भी स्पष्टता से चमकेंगी। हर नई खोज अब तक उजागर हुई बातों से भी अधिक गहन और रोचक कुछ प्रकट करेगी। यह विषय अक्षय है। मसीह के देहधारण, उसके प्रायश्चित्त बलिदान और मध्यस्थता के कार्य का अध्ययन तब तक परिश्रमी विद्यार्थी के मन को व्यस्त रखेगा जब तक समय रहेगा; और स्वर्ग की ओर, जिसके वर्षों की कोई गिनती नहीं, दृष्टि उठाकर वह पुकार उठेगा, 'भक्ति का रहस्य महान है'."

"अनंतकाल में हम वह जानेंगे, जो हमारी समझ को खोल देता, यदि हमें वह प्रकाश मिल गया होता जिसे यहाँ पाना संभव था। उद्धार के विषय अनन्त युगों तक उद्धार पाए हुए जनों के हृदय, बुद्धि और जिह्वा को व्यस्त रखेंगे। वे उन सत्यों को समझेंगे जिन्हें मसीह अपने शिष्यों के सामने खोलना चाहता था, पर जिन्हें वे विश्वास के अभाव के कारण ग्रहण न कर सके। सदा से सदा तक मसीह की परिपूर्णता और महिमा के नए-नए दर्शन प्रकट होते रहेंगे। अनंत युगों तक वह विश्वासयोग्य गृहस्वामी अपने भंडार से नई और पुरानी वस्तुएँ निकालता रहेगा।" Christ's Object Lessons, 132-134.